International Journal of Information Movement Vol.3 Issue V (September 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 27-31

सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरनेट) और हिन्दी भाषा

डॉ. ममता देवी
सहायक प्रवक्ता (हिन्दी)
माता सुन्दरी खालसा गर्ल्स कॉलेज, निसिंग (करनाल)

1.0 सूचना प्रौद्योगिकी :

पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आये हैं। विश्व में चारों ओर सूचना ओर प्रौद्योगिकी क्रान्ति चल रही है, जिस कारण सूचना युग का प्रारम्भ हो चुका है। जापान और अमेरिका जैसे देश अपनी विकासशीलता के कारण पहले से ही औद्योगिक समाज से सूचना समाज में बदल चुके हैं। मानव सभ्यता ने पिछले पचास–साठ वर्षों में जितना वैज्ञानिकता को ग्रहण किया है, वह मानव सभ्यता के इतिहास का नब्बे प्रतिशत बैठता है। इस ज्ञान में सबसे ज्यादा हिस्सा सूचना प्रौद्योगिकी का है। हिन्दी लेखन भी आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से प्रभावित हुआ है। हमारी भाषा हिन्दी अब देश की सीमाओं को लाँघकर विदेशों में पहुँच रही है। मानसिक स्वतंत्रता के लिए हमें, अंग्रेजी का सहारा छोड़कर अपनी भाषाओं को बढ़ाना होगा। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रसारण, संचार, रेडियो, टेलीविजन, दूरभाष, वीडियो, माइक्रोफोन, रिसिविंग सेन्टर, विज्ञापन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि आते हैं।

सम्प्रेषण मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। सम्प्रेषण के लिए भाषा आवश्यक अंग है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने सम्प्रेषण के आधुनिक स्वरूप का विकास किया है। मीडिया के ग्लोबल प्रसार ने सूचना विस्फोट जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी है। हिन्दी अपने विभिन्न वैविध्य विकसित कर रही है। भाषा सदा गतिशील होती है। मीडिया ने उसे और अधिक गति प्रदान की है। नई–नई जरूरतों के अनुरूप शब्द वाक्य और अभिव्यक्ति चुनने तथा वाक्य की विधियों को भी विकसित करते रहना होगा, इस प्रकार हिन्दी व्यापक जनमत का निर्माण करने वाली भाषा बन सकती है क्योंकि उसकी पैठ व्यापक जनसंख्या तक है और मीडिया की मजबूरी है कि वह इतनी व्यापक पैठ वाली भाषा की उपेक्षा नहीं कर सकता। इसलिए चाहे विकास के कार्यक्रम हों अथवा जन शिक्षण के, चाहे समाचार पत्र–पत्रिकाएं, विज्ञापन हों या समाचार चाहे मनोरंजन हो या इतिहास–मीडिया को सरल, अर्थपूर्ण और विषयवस्तु की प्रवृत्ति के अनुकूल भाषा की तलाश रहती है। हिन्दी ने व्यवहार क्षेत्र की इस बहुविविध व्यापकता के अनुरूप अपने को ढालकर अपनी भाषिक संचार क्षमता का विकास बहुत तेजी से कर दिया है। यही कारण है कि आज अन्तर्राष्ट्रीय चैनल में हिन्दी फैशन से लेकर विज्ञान और वाणिज्य तक सब प्रकार के आधुनिक संदर्भों को बखूबी व्यक्त कर रही है।

हमारे दैनिक जीवन में पत्र–पत्रिकाओं का बड़ा महत्व है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से हमें अनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि सभी प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है। यद्यपि भारत में पत्रकारिता का जन्म बहुत सामान्य स्तर पर हुआ, लेकिन वर्तमान में यह विद्या सशक्त, समृद्ध और प्रगतिशील हो चुकी है। पत्रकारिता को हम प्राचीन काल की खोज कह सकते हैं, और उस समय यह सूचनाओं को प्रेषित करने का एक मात्र साधन था।

मनुष्य ने अपनी विकास यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ावों को पार करते हुए वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक युग में प्रवेश किया। इन पड़ावों में चाहे समाचार सम्प्रेषण के माध्यम से बदलते रहे हैं परन्तु मनुष्य के भीतर का संसार आज भी उसी प्रकार परस्पर समाचार आदान–प्रदान करने के लिए विकल रहता है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया मनुष्य की विकास यात्रा का एक गौरवशाली पड़ाव है।

रेडियो पत्रकारिता इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का आदि स्वरूप है, जिससे आधुनिक पत्रकारिता का विकास हुआ। रेडियो की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह साक्षर और निरक्षर दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है। रेडियो वह माध्यम है जिसमें सूचनाओं को तुरन्त दूर–दराजों के क्षेत्रों तक पहुँचाने की विशिष्टता है। रेडियो के कार्यक्रम इसी कारण हिन्दी में प्रस्तुत कर सम्पूर्ण देश में सूचनाओं को प्रसारित करने का माध्यम बना।

आकाशवाणी की केन्द्रीय फीचर इकाई ने वर्ष 1998 में भारत की स्वतंत्रता के पचास वर्ष पर महिलाओं व बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, परिवार कल्याण, न्यायालय, फूलों का निर्यात, वन्दे मातरम् आदि। साथ ही राष्ट्रीय स्तर में 22 महत्वपूर्ण फीचर भी प्रसारित किये। खेती–बाड़ी से सम्बन्धित फार्म ब्राडकास्टिंग, परिवार कल्याण, संगीत, खेल, नायक आदि कार्यक्रमों का भी प्रसारण हिन्दी में किया जाता रहा। संचार क्रान्ति के प्रभाव ने आकाशवाणी को भी प्रभावित किया। नई तकनीक का समाचार कक्ष में प्रवेश, ई–मेल की शुरूआत तथा गीत और संगीत तथा फाने द्वारा फरमाईश का चैनल का चलन भी आकाशवाणी की लोकप्रियता बढ़ाता रहा है।[1]

टेलीविजन का विकास स्वतंत्र भारत में हुआ। प्रसारण माध्यमों में टेलीविजन ही ऐसा प्रसारण माध्यम है, जिसका भारत में उद्‌भव एवं विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ। भारत में संविधान में वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मौलिक अधिकार धारा 1917(क) द्वारा प्रदान किया गया। 1959 में टीवी कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ, जो हिन्दी में प्रस्तुत हुआ।[2] इसके उद्‌देश्य–स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा, यातायात के खतरे इत्यादि के सम्बन्ध में सामाजिक परिवर्तन लाना जन चेतना का विकास करना था। सामाजिक कार्यों को बढ़ावा देना, हिन्दी की उन्नति में मदद करना, राष्ट्रीय एकता की वृद्धि आदि था।

भारत के मीडिया के प्रेरणास्रोत भारत की जनता है, उसका चिन्तन संसार के प्रति भारतीय संस्कृति की धारणा है।[3]

आज सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और परिस्थितिक जिन्दगी से जुड़े हर पहलू का व्यवसायीकरण हो रहा है। इसमें उसका साथ दे रही नवीनतम तकनीक व उसे अपनाने की होड़ की वजह से इस दौर में अनेक कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही किये जा रहे है। आज हर आविष्कार कम्प्यूटर तकनीक पर आश्रित हैं। ऐसे में आम आदमी से संवाद करने की मजबूरी या यह कहिए कि अपनी मार्किट जगत में आम आदमी को भी अपने लाभ का साधन बनाने की ललक ने व्यापार जगत में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की आवश्यकता का आभास कराया है। हिन्दी के सर्वांगीण विकास की उज्ज्वल निर्मल धारा सूचना के माध्यम से प्रवाहित की जा सकती है। हिन्दी भाषा को समस्त क्षेत्रों, अद्यतन ज्ञान के पठन पाठन, सम्भाषण, सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम बनाना है। सूचना प्रौद्योगिकी में निर्मित तकनीकी शब्दावली का प्रचार होगा तथा तकनीक अनुदेशों की भाषा, कलपुर्जों का उपयोग, विधि की भाषा और अन्य कार्यों के रूप में हिन्दी का उपयोग कर यहाँ का वातावरण हिन्दीमय बनाया जा सकता है। रेडियो, फिल्म, पत्र–पत्रिका, दूरदर्शन में भी अंग्रेजी–हिन्दी शब्दों का नए सिरे से पुर्ननिर्माण सार्थक होगा। मीडिया की शिक्षा भारत जैसे विकासशील देश में अत्यन्त उपयोगी है।

सूचना प्रौद्योगिकी की भागीदारी तभी फलवती हो सकती है जब इसे स्वतंत्र होकर काम करने का अवसर मिलेगा। रेल, बैंक के परिचालन, पुस्तकालय आदि में हिन्दी अनुवाद तेजी से शुरू किये जाये। कम्प्यूटर कई भाषाओं का एक स्थान पर संकुल समाधान है। कम्प्यूटर साफ्टवेयर की मदद से भारत की प्रमुख भाषाओं में प्रत्येक मात्र 30 घण्टे के साफ्टवेयर व्याख्यान में सीखी जा सकती है। हिन्दी में सूचनाओं को शत्–प्रतिशत लाने हेतु कम्प्यूटर का भाषिक प्रयोग जानना जरूरी है।

भारतीय जनता को आज सरकार पर दबाव बनाना होगा कि सारे ज्ञान–विज्ञान और साहित्य को यथाशीघ्र हिन्दी में उपलब्ध कराया जाये। आज हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद में जो साफ्टवेयर उपलब्ध है, उन्हें और भी विकसित करके मुक्त रूप से इंटरनेट पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा विश्व भाषा के रूप में हिन्दी तभी जीवित रहेंगी जबकि वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की चुनौती का सामना कर सकेगी।

आज जरूरत है कि हिन्दी के व्यापक उपभोक्ता समाज की संख्या का ध्यान में रखते हुए हिन्दी के डाटाबेस विकसित किये जायें, हिन्दी में वेबसाइट पर विभिन्न विषयों के शब्दकोष और विश्वकोष उपलब्ध हों, वैज्ञानिक चैनलों के साथ–साथ आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चैनल भी हिन्दी में और भारतीयता को उभारने के दृष्टिकोण से स्थापित किया जाये। इस सारी तैयारी के साथ हिन्दी वैश्वीकरण और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की संयुक्त चुनौती का सामना कर सकती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

2.0 इंटरनेट और हिन्दी भाषा :

इंटरनेट इस युग का अधुनातन जनसंचार अस्त्र बनकर उभर रहा है। एक रूप में इस माध्यम ने सभी जनसंचार माध्यमों को भारी चुनौती दे दी है। यह माध्यम आकाशवाणी और दूरदर्शन का उन्नत संस्करण है। इसने सभी प्रकार के जनसंचार माध्यमों को अपने स्वरूप में समेटते हुए उपभोक्ता वर्ग के सामने एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत किया है कि जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अद्‌भुत है। इस माध्यम पर सूचना को देख सकते हैं, पढ़ सकते हैं और सुन सकते हैं, वह भी अपनी सुविधा के अनुसार। इस माध्यम पर सूचना एवं जनसंचार प्रौद्योगिकी का एक ऐसा विशाल भंडार उपलब्ध है जिसका उपयोग कोई भी उपभोक्ता कहीं भी और किसी भी रूप में कर सकता है। पहले समस्त प्रकार के जनसंचार माध्यम केवल सूचना प्रदाता के रूप में सामने रहते थे लेकिन इस माध्यम ने सूचना संवाहक की सुविधा को भी संभव बना दिया है अर्थात् हम इस माध्यम से वैश्विक संदर्भ में सूचना लेने का कार्य तो कर सकते हैं साथ ही साथ सूचना प्रेषित करने का उपक्रम भी कर सकते हैं।

इंटरनेट वैश्विक पहुँच रखने वाला जनसंचार माध्यम है। इस पर प्रयुक्त होने वाली भाषा को विश्व के सभी लोगों द्वारा देखा और पढ़ा जाना संभव है। वर्तमान संदर्भ में हिन्दी इंटरनेट पर पहुँच चुकी है अर्थात् वैश्विक समुदाय तक पहुँच चुकी है। इस दृष्टि से वैश्विक समुदाय तक हिन्दी भाषा का प्रसार हो चुका है। हिन्दी प्रचार–प्रसार में इंटरनेट की भूमिका को लेकर बहुत सारे भ्रम और भ्राँतियाँ थी। हिन्दी को इस माध्यम की अनुपयोगी क्षमता के रूप में रेखाकित करने के प्रपंच भी किए जाते रहे। यह वास्तव में पूर्ण रूप से एक प्रकार का दुष्प्रचार रहा है जिसका वास्तविक स्थिति से कोई लेना–देना नहीं था। इंटरनेट पर हिन्दी की वर्तमान स्थिति इस बात की पुष्टि करती है। इंटरनेट अपने आप में सूचना एवं जनसंचार का एक प्रभावी संजाल है जो संपूर्ण वैश्विक व्यवस्था को एक साथ एक रूप में उपलब्ध रहने की स्थिति में रहता है। यह इसका सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभावी पक्ष है।

आज इंटरनेट माध्यम पर हिन्दी कार्यक्रमों की विशाल श्रृंखला उपलब्ध है। इस पर हिन्दी सूचनाएँ एवं मनोरंजन कार्यक्रम तो मुख्य हैं ही साथ ही साथ हिन्दी समाचार एवं हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं को देखा और पढ़ा जा सकता है। इसके अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रमों को भी इंटरनेट वेबसाइटों पर देखा और सुना जा सकता है। यदि किसी कारणवश आकाशवाणी और दूरदर्शन के सीधे प्रसारित हिन्दी कार्यक्रम हम नहीं सुन या देख पाते हैं तो अपनी अनुकूलता के अनुसार इन हिन्दी कार्यक्रमों को इंटरनेट माध्यम पर सुन या देख सकते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि इंटरनेट हमारे लिए अलाद्दीन का चिराग है जो हमारी इच्छानुसार उचित समय पर किसी भी रूप में इच्छित जानकारी प्रदान कर सकता है। ज्ञान–विज्ञान से जुड़ी संस्थाओं के कार्यक्रम भी इस माध्यम पर उपलब्ध रहते हैं। जो लोग सीधे रूप में इन संस्थाओं से नहीं जुड़ पाते वे लोग इंटरनेट की सहायता से संबंधित संस्था की वेबसाइट या ब्लॉग आदि पर जाकर वांच्छित कार्यक्रमों का लाभ ले सकते हैं। अतः इंटरनेट माध्यम बहुउपयोगी संदर्भों वाला सिद्ध हो रहा है। इस पर रखी गई हिन्दी वेबसाइटें हिन्दी भाषा को वैश्विक परिदृश्य में प्रचारित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

जनसंचार के इस माध्यम पर आज हिन्दी में असीमित सम्भावनाएँ बन चुकी हैं। इन्हें साक्षात हम देख भी रहे हैं। आज किसी भी विषय से संबंधित कोई भी जानकारी संबंध्ति व्यक्ति इंटरनेट माध्यम द्वारा प्राप्त कर सकता है। स्त्री–पुरूष, अबालवृद्ध सभी के लिए यह माध्यम सूचना का भंडार साबित हो रहा है। हिन्दी की बढ़ती वेबसाइट इस ओर संकेत कर रही हैं कि वैश्विक स्तर पर इनकी कितनी माँग है। इसके अनुरूप हिन्दी भाषा वैश्विक परिदृश्य में अपना प्रसार कर रही है।

इंटरनेट पर आधुनिक संदर्भ में कई तकनीकों का विकास हुआ है। इन तकनीकों का सीधा लाभ वैश्विक प्रचार में हिन्दी को हो रहा है। ई–कॉमर्स इसकी एक प्रमुख तकनीक है। ई–कॉमर्स भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण तकनीक है। आज संपूर्ण विश्व के औद्योगिक घरानों की दृष्टि से एशिया के बाजार पर है। एशिया में भी भारत विशेष रूप से उनका पसंदीदा खरीददार और लाभप्रद देश है। इस दृष्टि से उत्पादक वर्ग द्वारा एशियाई संदर्भ में अपनी व्यापारिक नीति का निर्माण करना उनकी मजबूरी बन गई है। एशिया के संदर्भ में यदि व्यापार करना है तो भाषा के रूप में उन्हें हिन्दी को ही प्राथमिकता देनी होगी तो ही उनका व्यापार वैश्विक पृष्ठभूमि वाला हो सकेगा। इसलिए ई–कॉमर्स के माध्यम से खरीददारी करने के लिए हिन्दी भाषा इंटरनेट पर विशेष महत्त्व रखती है। 'ई–कॉमर्स ने पूरे विश्व को एक विशाल बाजार में परिवर्तित कर दिया है। इस बाजार में हम छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी वस्तु को खरीद और बेच सकते हैं। ई–कॉमर्स की किसी भी

वेबसाइट को खोलकर और उसे ऑर्डर देकर घर बैठे अपनी मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट पर खरीददारी करने का अत्यन्त सुलभ माध्यम है क्रेडिट कार्ड। इंटरनेट पर उपलब्ध इन सभी सुविधाओं में हिन्दी का प्रयोग संभव है और बहुत बड़े वर्ग द्वारा यह प्रयोग किया भी जा रहा है। भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर तकनीक के क्षेत्र में हो रहे तीव्रगामी विकास के कारण आज जटिल से जटिल कम्प्यूटर संबंधी कार्यों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है।'[4] इस प्रकार इंटरनेट की विविध तकनीकी सुविधाएँ हिन्दी भाषा को वैश्विक संदर्भ में प्रचारित कर रही हैं।

इंटरनेट तकनीक का किसी एक विशेष धर्म, जाति या देश से संबंध नहीं है। यह तकनीक विश्वव्यापी है अर्थात् विश्व का कोई भी व्यक्ति इस तकनीक का लाभ अपने संदर्भ में उठा सकता है। 'इंटरनेट संचार प्रणाली का सबसे दिलचस्प पहलू है इसका सभी देश, जाति, धर्म एवं सीमाओं के बंधन से न बंधते हुए पूरी दुनिया में पहुँच किसी भी देश की छोटी से छोटी कंपनी अपने उत्पादों की गुणवत्ता के
आधार पर पूरी दुनिया में इंटरनेट के माध्यम से छा सकती है। विभिन्न उत्पादों के साथ उसकी विशेषताओं को ब्यौरेवार प्रस्तुति इंटरनेट की प्रमुख विशेषता है।'[5] इन उत्पादों को अब इंटरनेट माध्यम पर हिन्दी भाषा माध्यम द्वारा भी बेचा या खरीदा जा रहा है। इससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा माध्यम का प्रचार और प्रसार इंटरनेट के द्वारा हो रहा है।

इंटरनेट पर अधिकांश वेबसाइटें अंग्रेजी माध्यम में हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हिन्दी वेबसाइटें हैं ही नहीं। इंटरनेट पर हिन्दी वेबसाइटों की भी कोई कमी नहीं है। दिन–प्रतिदिन हिन्दी की इन वेबसाइटों में वृद्धि देखने को मिल रही है। इन हिन्दी वेबसाइटों की वृद्धि यह सूचित करती है कि वैश्विक स्तर पर हिन्दी को जानने वालों की संख्या काफी है और इसमें लगातार बढ़ौतरी हो रही है। हिन्दी वेबसाइटों की संख्या एवं इन वेबसाइटों का बढ़ता उपयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता का संकेत है। यह परिवर्तन भाषा को विस्तार प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाता है जिससे अधिकांश लोगों के बीच हिन्दी पहुँच सके। इंटरनेट की हिन्दी में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को आकर्षित कर सके इस प्रकार के अंग्रेजी एवं अन्य भाषा के शब्दों का चयन किया गया है और इसे राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है। इस प्रकार हिन्दी का यह विकसित रूप हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अन्य भाषाओं के मुकाबले कुछ विशेष स्थान प्राप्त कराने में मदद करता है।

इंटरनेट सूचना प्राप्ति का प्रधान माध्यम है। इस माध्यम पर हर पल कुछ न कुछ नया आता है और पुराना हटता चला जाता है। विश्व का वह हर नागरिक जो इसकी प्रविधि का जानकार है वह लगातार अपनी जानकारी को नवीनता प्रदान करने का प्रयत्न करता रहता है। यह जानकारी फिर किसी भी भाषा माध्यम द्वारा प्राप्त होती हो। प्रथम तो वह उपभोक्ता सूचना प्राप्ति के लिए अपनी मातृभाषा का सहारा लेता है पर यदि उसे वह सूचना अपनी मातृभाषा में प्राप्त नहीं होती तो वह अन्य भाषा का सहारा लेता है। अन्य भाषा के रूप में संपूर्ण विश्व समुदाय हिन्दी भाषा की ओर ताकता हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार सूचना प्राप्ति के लिए मातृभाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा इंटरनेट माध्यम पर लोकप्रिय होती जा रही है। 'इंटरनेट के महत्त्व के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है। इस माध्यम ने सूचना प्रसार में जैसी क्रांति पैदा की है वैसा कोई दूसरा उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। लोगों के हिन्दी के प्रति लगाव और इंटरनेट पर इसके विकास के लिए कटिबद्ध होने को देखकर बहुत हर्ष होता है। यह विश्वास से कहा जा सकता है कि हिन्दी जल्दी ही इंटरनेट पर वो ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेगी जिसकी यह भाषा अधिकारी है।'[6] निःसंदेह हिन्दी भाषा इंटरनेट माध्यम पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होगी। इससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा का प्रचार होगा।

निर्विवाद रूप से हम देख रहे हैं कि इंटरनेट माध्यम ने हिन्दी को वैश्विक आबादी के घरों तक कम्प्यूटर के स्क्रीन पर एक पहचान बनाने में उल्लेखनीय कार्य किया है। इससे हिन्दी प्रसार के नये मार्ग निर्मित हो रहे हैं। इंटरनेट आज कम्प्यूटर स्क्रीन से होते हुए लेपटॉप, पामटोप और मोबाइल स्क्रीन पर सिमट कर रह गया है। आज इंटरनेट के हिन्दी कार्यक्रमों का लाभ वैश्विक समुदाय निरंतर अपनी उपयोगिता के संदर्भ में ले रहा है। हिन्दी के इंटरनेट कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय एक–दूसरे के निकट आ गए हैं। इन सभी संदर्भों को देखते हुए निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि

इंटरनेट माध्यम ने हिन्दी को विश्वपटल पर भाषिक पहचान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह प्रभावी रूप से किया है।

3.0 संदर्भ

1 हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा, आशा गुप्ता, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2014, पृष्ठ 113
2 वहीं, पृष्ठ 114.
3 वहीं, पृष्ठ 121.
4. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी, डॉ. रेशमा नदाफ, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010, पृ. 128
5. संचार, सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ. प्रेमचन्द पातंजलि, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण–2008, पृ. 133
6. मीडिया के बदलते तेवर, अनामी शरण बबल, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2009, पृ. 301